अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड4, अंक1, जनवरी - मार्च 2026

मध्य पूर्व युद्ध का भारतीय प्रवासीय कामगारों पर होने वाले असर

डॉ. इरसाद अली

सहायक प्राध्यापक (Guest) श्रम एवं सामाज कल्याण/कार्मिक प्रबंध एवं औद्योगिक सम्बन्ध विभाग
सर्व नारायण सिंह राम कुमार सिंह (S.N.S.R.K.S.) महाविद्यालय सहरसा

(B.N. Mandal University Madhepura-851213)
Bihar

सार

भारत विश्व का सर्वाधिक आबादी वाला देश है, जो विश्व की लगभग एक छठे हिस्से की आबादी का प्रतिनिधित्व करता है। संयुक्त राष्ट्र के विश्व जनसंख्या डैशबोर्ड के अनुसार, अप्रैल 2023 में भारत की जनसंख्या 1.428 अरब से थोड़ी अधिक हो गई।

खाड़ी देशों में रह रहे 1 करोड़ भारतीयों की बढ़ी चिंता।
भारत अपेक्षाकृत युवा देश बना हुआ है, 2024 तक, औसत आयु लगभग 29.8 वर्ष है। (UNFPA) का अनुमान है कि 68ः आबादी 15 से 64 वर्ष की आयु के बीच है, जिससे एक संभावित ''जनसांख्यिकीय लाभांश'' उत्पन्न होता है, जहाँ बड़ी संख्या में कामकाजी आयु वर्ग की आबादी है।

भारत में प्रवासी कामगारों के अनुमान प्रवास की गतिशील प्रकृति के कारण काफी भिन्न-भिन्न हैं। 2011 की जनगणना में 41 मिलियन से अधिक अंतर-राज्यीय प्रवासी कामगारों की संख्या दर्ज की गई थी, जबकि हाल के व्यापक अनुमानों के अनुसार यह संख्या 14 करोड़ से अधिक है।

भारत में प्रवासी कामगारों से संबंधित प्रमुख आंकड़े:-

- 2011 की जनगणना के अनुसार, 4,14,22,917 (लगभग 4.2 करोड़) अंतरराज्यीय प्रवासी कामगार है।
- आंतरिक प्रवासियों की संख्या अक्सर 14 करोड़ से कहीं अधिक होती है।।
- उत्तर प्रदेश और बिहार अंतरराज्यीय प्रवासियों के सबसे बड़े स्रोत हैं।
- महाराष्ट्र, दिल्ली, तमिलनाडु, गुजरात और कर्नाटक में आंतरिक प्रवासियों के सबसे अधिक श्रमिक प्रवास करते हैं।
- मुख्य रूप सेः निर्माण, खनन, विनिर्माण और कृषि वे प्राथमिक उद्योग हैं जिनमें ये श्रमिक कार्यरत हैं।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड4, अंक1, जनवरी - मार्च 2026

UAE में भारतीय प्रवासियों का बड़ा फैसला, जान से ज्यादा नौकरी की चिंता में।

आंतरिक प्रवासन की उच्च मात्रा शहरी अर्थव्यवस्थाओं में इन श्रमिकों द्वारा निभाई जाने वाली महत्वपूर्ण भूमिका है।
मिडिल ईस्ट (ईरान-इजराइल-अमेरिका) युद्ध के कारण खाड़ी देशों में काम कर रहे भारतीय प्रवासी मजदूरों भारी दिक्कतों का सामना कर रहा हैं, जिसमें सुरक्षा का डर, लाखों नौकरियों पर खतरा, और वापस लौटने की मजबूरी प्रमुख हैं। उड़ानें रद्द होने से हजारों लोग वहां फंस गए हैं, जबकि भारत में उनके परिवार आर्थिक अनिश्चितता के कारण चिंतित हैं।

युद्ध के कारण 36 लाख से अधिक भारतीय नौकरियां खतरे में हैं। कई मजदूरों को वेतन नहीं मिल रहा है या वे मजदूरी कम होने की समस्या से जूझ रहे हैं।

ईरान जंग के साये में मजबूर भारतीयों का दर्द
खाड़ी देशों पर इरान के मिसाइल और ड्रोन हमलों के डर से प्रवासी मजदूर कामर छोड़ने को मजबूर है। अब तक लगभग 6.49 लाख भारतीय वापस लौट चुके हैं, जिससे यूपी-बिहार जैसे राज्यों में बेरोजगारी का दबाव बढ़ा है।

आर्थिक अनिश्चितताः वहां से आने वाला रेमिटेंस (पैसा) कम हो सकता है, जिससे घर पर निर्भर परिवारों की आर्थिक स्थिति बिगड़ सकती है।

खाड़ी देशों (GCC) में वर्तमान में लगभग 90 लाख से 1 करोड़ (9-10 मिलियन) भारतीय कामगार कार्यरत हैं, जिनमें बिहार के लगभग 70,000 से अधिक (2024 के आंकड़े) कुशल कामगार शामिल हैं। संयुक्त अरब अमीरात (UAE) और सऊदी अरब सबसे लोकप्रिय हैं, जहाँ अधिकांश ब्लू-कॉलर मजदूर निर्माण, हॉस्पिटेलिटी और सेवा क्षेत्रों में काम करते हैं।

खाड़ी देशों (GCC) में प्रवासी कामगारों का विवरण (2025-2026 के अनुसार):

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड4, अंक1, जनवरी - मार्च 2026

जिंदगी से ज्यादा जॉब की टेंशन, ईरान-अमेरिका का तनाव के बीच खाड़ी देशों में काम कर रहे भारतीय मुश्किल हालात के बादवजूद डटे हूए हैं।

- कुल भारतीय कामगारः अनुमानतः 90 लाख से 1 करोड़ के बीच।
- बिहार के कामगारः बिहार से विदेश (मुख्यतः खाड़ी) जाने वाले कामगारों की संख्या में बढ़ोतरी हुई है, जो 2024 में 72,945 (72,000़) तक पहुँच गई।
- प्रमुख देश (बिहारी कामगारों के लिए)ः
- यूएई (UAE)ः=29,191़$
- सऊदी अरबः=28,293़$
- कतरः=5,829़$

बिहार के गोपालगंज, सीवान जैसे जिलों से बड़ी संख्या में लोग खाड़ी देशों में काम करते हैं।
बिहार के जातीय सर्वे रिपोर्ट (2023) के अनुसार, लगभग 15.89 अरब से अधिक लोग दूसरे राज्यों में नौकरी या रोजगार कर रहे हैं। जबकि अन्य रिर्पोटों और विपक्षी दावों के अनुसार राज्य से बाहर काम करने वाले प्रवासी मजदूरों की वास्तविक संख्या-3 से 3.5 करोड़ बीच भी बताई जाती है। सर्वाधिक प्रवासन वाले जिले-गोपालगंज, मधुबनी, अररिया, सुपौल, पुर्णियाँ, सहरसा और शिवहर है।

भारतीयों की जान और नौकरी
इस युद्ध से न सिर्फ खाड़ी देशों में कार्यरत प्रवासी कामगारों को है बल्की देश के अन्दर भी कार्यरत अन्तर राज्य प्रवासी श्रमिकों को इस युद्ध का असर दिखाई दे रहा है। एल0पी0जी0 गैस के निरंतर आपूत्री में हुए व्यवधान ने मजदूरों को घर वापस लौटने को मजबूर कर दीया है चूँकी अधिकांश प्रवासी मजदूर अस्थाई होते जिस कारण से एल0पी0जी0 गैस का कनेक्शन नहीं हो पाता है जिस कारण अभी के हालात में प्रवासी श्रमिकों को खाना मंहगा पड़ रहा है। जिससे उसकी बचत कम हो रही है जिससे वह वापस घर लौटने को मजबुर है।

खाड़ी देशों में कार्यरत प्रवासी कामगारों पर सुरक्षा का पूरा डर है। क्योंकि इरान के सभी खाड़ी देशों पर अपना ड्रोन और मिसाइल से हमला कर उथल पुथल मचा दिया है।

Key Words:- खाड़ी देश, ओपेक, मध्य पूर्व (मिडिल इस्ट), ओमान, प्रवासी, अन्तराष्ट्रीय प्रवासी कामगार, ब्लू-कॉलर मजदूर, निर्माण क्षेत्र, ड्रोन, मिसाइल, इरान, संयुक्त अरब अमिरात, सउदी अरब, प्रवासन, अन्तराल प्रवास

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड4, अंक1, जनवरी - मार्च 2026

निष्कर्ष:-

यह कह सकते हैं कि जो खाड़ी देशों में बिहार और देश के अन्य राज्यों के प्रवासी श्रमिकों में उन्हें अपनी सुरक्षा की काफी चींता है साथ-साथ नौकरी जाने से बेरोजगार होने एवं अन्तराज्य प्रवासी कामगारों को आर्थिक परेशानी का असर पड़ रहा है। जिस कारण अन्तराष्ट्रीय और अन्तराज्य प्रवासी कामगार पर वत्र्तमान में सुरक्षा, बेरोजगारी और आर्थिक तंगी का असर पड़ रहा है।

स्रोत:-

1. ई-माइग्रट पोर्टल
2. भारतीय जनगणना रिपोर्ट 2011
3. https://www/livehindustan.com
4. Demographics of India-Wikipedia.
5. GulfHindi.com